ई–बुलेटिन

कृषिउद्यमी

MANAGE

प्रतीयमान अनुभव को बांटने वाला मंच

प्रत्येक कृषक द्वारा बेहतर कृषि

खंड-VII अंक-IX

दिसम्बर, 2015

इस अंक में:

- एसी एवं एबीसी योजना के अंतर्गत ऐग्री-वेंचर पर राष्ट्रीय स्तरीय नैदानिक कार्यशाला
- इस माह के कृषि उद्यमी : श्री. बलबीर सिंह, नैनीताल, उत्तराखंड
- इस माह का संस्थान : साधना, केवीके, अमरावती
- जलगांव के कृषिउद्यमी को महाराष्ट्र कृषि भूषण पुरस्कार से सम्मानित किया गया

कृषिउद्यमी की मुफ्त हेल्पलाइन का उपयोग करें

1800 –425-1556

" कृषि उद्यमिता एक ऐसा प्रतीयमान मंच है जहां कृषि उद्यमियों, बैंकरों, कृषि व्यवसाय कंपनियों, नोडल प्रशिक्षण संस्थानों, विस्तार कार्यकर्ताओं, शिक्षाशास्त्रियों, अनुसंधानकर्ताओं तथा कृषि व्यवसाय चिंतकों, जो देश में कृषि उद्यमिता विकास के लिए कार्य कर रहे हैं, के अनुभवों को सबके साथ बांटा जाता है।

एसी एवं एबीसी योजना के तहत ऐग्री-वेंचर पर राष्ट्रीय स्तरीय नैदानिक कार्यशाला

एसी एवं एबीसी के अंतर्गत प्रशिक्षित कृषिउद्यमियों द्वारा ऐग्री-वेंचर न स्थापित कर पाने के पीछे के कारण को समझने के लिए 11 दिसम्बर 2015 को मैनेज, हैदराबाद में एक दिवसीय राष्ट्रीय स्तरीय नैदानिक कार्यशाला आयोजित की गई। श्रीमती एम.उषा रानी, आईएएस, महानिदेशक, मैनेज की यह पहल इस तरह का पहला प्रयोग था। डॉ. पी. चन्द्र शेखर, निदेशक सीएडी, मैनेज ने अतिथियों का स्वागत किया और कार्यशाला के उद्देश्य के बारे में जानकारी दी। एसी एवं एबीसी योजना पर प्रकाश डालते हुये उन्होंने इस बात पर ज़ोर दिया कि सर्वोच्च प्राथमिकता प्रशिक्षित कृषि उद्यमियों द्वारा कृषि उद्यम की स्थापना पर दी जानी चाहिए। कई कारणों से जो लोग उद्यम स्थापित करने में असफल रहते है उनके लिए आवश्यक सुविधाएं और बेहतर ठोस सहायता प्रदान करनी होगी। श्रीमती वी. उषा रानी, आईएएस, महानिदेशक ने अपने उद्घाटन भाषण में 45,000 प्रशिक्षित कृषि उद्यमियों में से केवल 4% सफल ऐग्रीबिज़नस मॉडल स्थापित हो पाने की पुष्ठभूमि पर एसी एवं एबीसी योजना को ठीक करने के विषय को उठाया। महानिदेशक चाहती थी कि ज़्यादा-से-ज़्यादा कृषि उद्यमी नई तकनीकों के प्रयोग से लाभकारी और अभिनव वेंचर स्थापित करें, और कृषि समुदाय के विकास के लिए महत्वपूर्ण योगदान दे। नैदानिक कार्यशाला की सराहना करते हुये उन्होंने कहा कि इस तरह की चर्चाएं स्टैक होल्डरों को कृषि उद्यमियों द्वारा क्षेत्र स्तर पर सामना की जा रही विभिन्न बाधाओं का यथार्थवादी दृष्टिकोण प्राप्त करने में मदद करती है।

ऐग्री-वेंचर पर राष्ट्रीय स्तरीय नैदानिक कार्यशाला

महानिदेशक ने कृषि उद्यमियों से उनके व्यापार और व्यवहार में नैतिक प्रथाओं का पालन करने का अनुरोध किया जो उन्हें समुदाय से आदर प्राप्त करने में मदद करेगा। श्री. जी. के. मूर्ति, डीजीएम, नाबार्ड ने इस तरह का नैदानिक आयोजन आयोजित करने की सराहना करते हुये कहा कि इस तरह की कार्यशालाएं स्टेकहोल्डरों को कृषि उद्यमियों द्वारा क्षेत्र में सामना की जा रही बाधाओं की प्रत्यक्ष सूचना और प्रयाप्त जानकारी प्रदान करता है। उन्होंने एसी एवं एबीसी के संबंध में नाबार्ड और अग्रणी बैंकों द्वारा सक्रिय समर्थन का आश्वासन दिया। श्री. के. सजीत कुमार, संयुक्त निदेशक, कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय ने अपने सम्बोधन में कहा कि व्यावसायिक रूप से योग्य युवा ऐग्री-वेंचर स्थापित कर उत्प्रेरक के रूप में भारत की कृषि के भविष्य में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। कार्यशाला में किए गए विचार-विमर्श के कारण प्रशिक्षित कृषि उद्यमियों द्वारा ऐग्रीवेंचर स्थापित करने हेतु पथ परिभाषित करने और रूपरेखा तैयार करने हेतु रास्ते चित्रित किए गए। श्रीमती. ज्योति सहारे, सलाहकार, सीएडी, मैनेज ने धन्यवाद ज्ञपित किया।

ब्लूमिंग बड्स द्वारा फलता-फूलता मुनाफा

नयागांव, नैनीताल, उत्तराखंड के श्री. बलबीर सिंह कंबज (47) पॉली-हाउस में गेरबेरा, लिलियम, ग्लैडीओलस और गुलाब उगाते है और कृषकों को बीज, कंद, कलम और रोपण सामग्री की आपूर्ति करते है। उन्होंने 14 एकड़ की जमीन में 14 पॉली हाउसों का निर्माण किया है। मौसम अनुकूल हो या न हो पॉली-हाउस में वर्ष भर फसलें उगती है; तथा उत्पादकता भी खुले क्षेत्र में खेती से 4 गुना ज़्यादा है। यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि, उत्पादित फसल की गुणवत्ता भी बेहतर है और मुनाफा भी अधिक प्राप्त हो रहा है। कृषि की पुष्ठभूमि वाले परिवार से होने के कारण, बलबीर ने कृषि विज्ञान में स्नातकोत्तर के पश्चात कॉन्टिनेन्टल सीड कंपनी में बिक्री प्रबन्धक का कार्य चुना। हालांकि, उनकी नौकरी से असंतुष्ट होने के कारण क्योंकि इसके कारण उन्हें हमेशा घर से दूर रहना पड़ता था, उनकी नौकरी में अधिक यात्रा होने के कारण वें अपने पिता के साथ बीज के व्यवसाय से जुड़ गए। साथ ही बलबीर अपना वेंचर आरंभ करने के लिए विकल्प और मार्ग ढूंढ रहे थे। इस दौरान, उन्होंने एक स्थानीय अखबार में कृषि उद्यमी बनने के लाभों को चिन्हांकित करते एसी एवं एबीसी प्रशिक्षण कार्यक्रम से संबन्धित एक विज्ञापन देखा। तत पश्चात बलबीर, जुबिलंट एग्रिकल्चर रुरल डेव्लपमेंट सोसाइटी (जेएआरडीएस), मोरदाबाद के नोडल अधिकारी से मिले और प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया। बाजार के सर्वेक्षण के दौरान, जो प्रशिक्षण कार्यक्रम का एक भाग था, वें उनके नजदीक के जिले के फूलों के बड़े बाज़ार से प्रभावित हुये। पुष्प उत्पादन के कृषकों, विक्रेताओं और व्यापारियों से अधिक विचार-विमर्श ने उन्हें काफी प्रेरित किया और उन्होंने संरक्षित पुष्प उत्पादन चुनने का निर्णय लिया।

कृषकों से बात करते हुये श्री बलबीर सिंह

संरक्षित पुष्प उत्पादन के अंतर्गत वर्तमान उत्पादन स्थिति

स्थान	क्षेत्र (वर्ग मीटर)	फसल	कंद/पौधे/वर्ष	प्रजाति
नयागांव	10,000	गेरबेरा	60,000	जूलिया, अमिलिए, रेओनीग्रो, मरीनिल्ला
	3,000	लिलीयम	90,000	येल्लोवीन, एर्कोलेनों, ब्रुनेल्लो, ट्रेस्सर
बजुन	4,000	लिलियम	1,20,000	मदर चॉइस, येल्लोवीन, कूरियर
	2,000	कारनेशन	40,000	डोना, व्हाइट डोना, डोमिंगो, केरो, लुना
कुल	19,000			

5 लाख के आरंभिक निवेश के साथ उन्होंने पहला पॉली-हाउस गेरबेरा उत्पादन के लिए स्थापित किया और "ब्लूमिंग बड्स" नाम से अपना फ़र्म पंजीकृत करवाया। उनका कहना है, "तीन से चार महीनों में मेरे फूल खिलना शुरू हो गए और मेंने रु.20,000 प्रति माह निवल आय अर्जित की"। इसके पश्चात, उन्होंने अपने गाँव में संरक्षित पुष्प उत्पादन के लिए क्षेत्र को धीरे-धीरे 13,000 वर्ग मीटर तक बढ़ा दिया। वें पॉली-हाउस के प्रबंधन, ग्रीनहाउस फैब्रिकेशन, नवीनीकरण और मरम्मत के विषय में कृषकों को परामर्श भी देते हैं। श्री. बलबीर कंबोज के पर्यवेक्षण में लगभग 300 कृषकों ने संरक्षित पुष्प उत्पादन आरंभ किया है। उन्होंने 21 कुशल कामगरों को नियुक्त किया है और उनके फ़र्म ब्लूमिंग बड्स का वार्षिक कारोबार रु.80 लाख है। श्री. बलबीर कंबोज कृषि और प्रसंस्कृत खाद्य उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण (एपीईडीए) से जुड़े हुये है और पुष्प उत्पादक असोशिएशन के भी सदस्य है। वें अपने उत्पादों को दिल्ली, लखनऊ, कानपुर, और जयपुर के आला बाज़ारों में रु.5/ स्पाइक के प्रभावशाली दर पर बेचते है। उन्हें लिलियम के लिए अधिकतम दर रु.5/स्पेक और कार्नेशन के लिए रु.7/स्पेक प्राप्त होती है। श्री. बलबीर सिंह कंबोज, बागबानी विभाग, उत्तराखंड सरकार द्वारा देहारादून में आयोजित बसंतोत्सव, स्प्रिंग फेस्टिवल-पुष्प प्रदर्शनी और पुष्प प्रतियोगिता में सर्वश्रेष्ठ पुष्प उत्पादक से सम्मानित किया गया। श्री.बलबीर कंबोज ने हॉलैंड, चीन, हाँग काँग, और मकाउ का भी दौरा किया और उन्हें संरक्षित उत्पादन में अंतर्राष्ट्रीय एक्स्पोशर भी प्राप्त है। उनका कहना है कि, "कृषि उद्यमियों द्वारा इस प्रकार के एक्स्पोशर दौरे उनके ज्ञान को बढ़ाने, नई सूचना प्राप्त करने, और प्रेरित होने के लिए आवश्यक है"। श्री. बलबीर का कहना है कि, "यह कैरियर विकल्प ग्रामीण युवाओं के लिए अच्छा है और इसके लिए उच्च शिक्षित पुष्प उत्पादक होने की भी आवश्यकता नहीं है। विषय पर उत्साह और ग्रीनहाउस का कुछ व्यावहारिक अनुभव शुरुआत करने वालों के लिए काफी है।

श्री. बलबीर सिंह कंबोज
ब्लूमिंग बड्स, नयागांव ग्राम, कालादूंगी पोस्ट, नैनीताल, उत्तराखंड , मोबाइल: 09411167911

श्री. ए. के. ढापके
नोडल अधिकारी

एनटीआई का नाम: साधना कृषि विज्ञान केंद्र, दुर्गापुर, अमरावती
पता: ऐग्री-क्लीनिक एंड ऐग्री-बिज़नस केंद्र प्रकोष्ठ, दुर्गापुर (बड्नेरा), जिला अमरावती, पिन -444701, महाराष्ट्र, फोन: 0721-2580606 (का.), 2561 009 (आर), 2580606 (फ़ैक्स)
मोबाइल सं: 09922410177
ईमेल: acabcdurga-pur@gmail.com
वेबसाइट: www.kvkdurgapur.org

प्रशिक्षण की संख्या: 20
प्रशिक्षित अभ्यर्थियों की संख्या: 593
स्थापित वेंचरों की संख्या: 246
सफलता का दर: 41.48%
स्थापित ऐग्रीवेंचर:
ऐग्री-क्लीनिक, डेयरी एकक, कुक्कड पालन, जैव-खाद एकक, केंचुआ खाद एकक, बीज प्रसंकरण एकक, पशु चारा, दूध एकत्रण केंद्र, मूल्य संवर्धन, पशुचिकित्सा क्लीनिक, बकरी पालन, कृषि उपकरण एकक, आदि।

सूचना प्रौद्योगिकी के कारण ग्राम कृषि ज्ञान केंद्र (वीएकेएच)

सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी) ज्ञान प्राप्त करने तथा उसका प्रसार करने के लिए मुख्य उपकरण है। यह वह मजबूत माध्यम भी है जो समाज में बदलाव लाता है। समग्र कृषि और ग्रामीण विकास हेतु ज्ञान और सूचना आईसीटी द्वारा दूरवर्ती क्षेत्रों तक पहुंचाई जा सकती है और इस तरह यह ग्रामीण ज्ञान के विकास और बदलाव का अग्रदूत हो सकता है। सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के महत्व को देखते हुये, केवीके-दुर्गापुर ने कृषक समुदाय के कल्याण के लिए प्रशिक्षित कृषि उद्यमियों को जोड़ने के लिए ग्राम कृषि ज्ञान केंद्र (वीएकेएच) के नाम से एक परियोजना विकसित की। इसका मुख्य उद्देश्य था केवीके में विकसित कृषि तकनीकों को कृषि उद्यमियों द्वारा कृषकों के खेतों तक पहुंचाना। इस प्रायिजोना में तीन स्टेकहोल्डरों केवीके के वैज्ञानिक, कृषि उद्यमी और कृषक की भूमिका।

माननीय श्रीमती प्रतिभाताई पाटिल , एक्स-प्रेजिडेंट ऑफ़ इंडिया, किसानों से विडियो कॉन्फेरनसिंग से बाते करते हुए

वीएकेएच के 4 महत्वपूर्ण मध्यवर्ती:

प्रशिक्षण: कृषि उद्यमियों द्वारा नियमित रूप से गाँवों में सूचना प्रौद्योगिकी के विषय में ग्रामीण युवाओं के लिए प्रशिक्षण आयोजित करना।

सूचना केंद्र: कृषि से संबन्धित सभी प्रौद्योगिकी रिपोर्ट, मौसम की रिपोर्ट, बाज़ार से जुड़ी जानकारी गाँवों के सूचना पट्ट पर प्रदर्शित करना।

प्रौद्योगिकी उन्नयन: केवीके के वैज्ञानिक कृषि और संबन्धित क्षेत्रों में कृषि उद्यमियों द्वारा कृषकों को बेहतर जानकारी प्रदान करेंगे।

प्रतिपुष्टि: कृषि उद्यमी केवीके को उनके द्वारा विकसित उन्नयन कृषि पद्धतियों की प्रतिपुष्टि देंगे।

इस परियोजना में, कृषि विज्ञान केंद्र, दुर्गापुर के 10 की.मी. के दायरे में से 7 गाँवों को इसके कार्यान्वयन के लिए चुना गया। प्रत्येक गाँव के ज्ञान केंद्र में एक कम्प्युटर के साथ इंवर्टर, प्रिंटर, इंटरनेट कनैक्शन, और प्रशिक्षित कृषि उद्यमी था। इन सभी 7 गाँवों को एक दूसरे से जोड़ा गया और कृषि विज्ञान केंद्र, दुर्गापुर (बड्नेरा), अमरावती जिले से भी जोड़ा गया। विडियो कॉन्फ्रेंसिंग, कृषि-उत्पादों के लिए विज्ञापन, प्रणाली प्रदर्शनी, प्रत्यक्ष प्रशिक्षण और कृषि विशेषज्ञों से वार्तालाप आदि सुविधाएं इस प्रायिजोना में उपलब्ध थी। 7 गाँव के लगभग 70% कृषकों को इंटरनेट के प्रयोग, वीएकेएच केंद्र से विडियो कॉन्फ्रेंसिंग से लाभ हुआ।

जलगांव के कृषि उद्यमी को "महाराष्ट्र भूषण (शेंद्रिय शेटी संस्था)" द्वारा सम्मानित किया गया

महाराष्ट्र के जलगांव जिले के श्री. सोन्याबापू मुरलीधर धनद को जैव कृषि और वाटरशेड प्रबंधन की प्रचारक गतिविधियों हेतु महाराष्ट्र भूषण पुरस्कार-2013 से सम्मानित किया गया। श्री धनद मिट्कोण कंसल्टेंसी सर्विसेस लिमिटेड, पुणे से प्रशिक्षित कृषि उद्यमी है। श्री धनद द्वारा स्थापित संगठन की मुख्य गतिविधि जैविक-कृषि और वाटरशेड प्रबंधन पर परामर्श प्रदान करना है। 15 स्वयंसेवी जो जैविक कृषि, पर्यावरण, वाटरशेड विकास, जैव विविधता और क्षमता निर्माण से परिचित है उनको सम्मिलित कर पंजीकृत किया गया। इस संगठन ने जैविक कृषि और वाटरशेड प्रबंधन के प्रसार के लिए प्रत्येक गाँव से 15 सदस्यों को भर्ती करते हुये 15 गाँवों को गोद लिया। इस संगठन ने "शेटकारी ते ग्राहक थेट विक्री" (कृषक से उपभोगता तक सीधे बिक्री) टैग के अंतर्गत जैविक सब्जियों के उत्पादन हेतु 5R (5445 वर्ग फुट) मॉड्यूल विकसित किया है जहां कृषकों को बिचौलियों को अलग रखते हुये बाज़ार का मुनाफा प्राप्त होता है। वाटरशेड प्रबंधन में, संगठन ने एक परखोड़े गाँव, पछोरा तालुका, जलगांव जिले को मृदा और जलग्रहण संरक्षण के लिए गोद लिया। सभी ग्रामवासियों को परियोजना के बारे में जानकारी दी गयी और लाभार्थियों के रूप में वर्गीकृत किया गया। कार्यान्वयन के दौरान, ग्रामवासियों ने मिलकर प्रत्येक सूक्ष्म वाटरशेड में नहरों की चौड़ाई बढ़ाने और गहरा करने का कार्य किया। सामूहिक कार्य के कारण नहरों, टैंकों, कुओं आदि से 3000 ट्रैक्टर गाद निकाला जा सका और 25 हेक्टर के क्षेत्र में फैलाया जा सका। इस नेक काम को मान्यता देने के लिए महाराष्ट्र राज्य सरकार ने श्री. धनद को राज्य स्तरीय पुरस्कार "कृषि भूषण" (जैविक कृषि)-2013 से सम्मानित किया और भारत कृषक समाज ने "कृषि गौरव" से सराहा। श्री. सोन्याबापू मुरलीधर धनद से नर्मदा एग्रो टेक. 200, ग्राउंड फ्लोर, नया बी.जे. मार्केट, जलगांव – 425001, महाराष्ट्र। मोबाइल सं. 09422282982 ई-मेल: sagardhanad@yahoo.com

श्री इस एम् धनाड (कृषि उद्यमी) इन्हें महाराष्ट्र भूषण पुरुष्करासे सन्मानित किया

www.agriclinics.net वह पोर्टल है जो एसी तथा एबीसी योजना के बारे में सूचना प्रदान करता है। यह पोर्टल पात्रता मानदंडों, प्रशिक्षण संस्थानों, प्रशिक्षण कार्यक्रमों, सहायता कार्यों, वित्त विकल्पों तथा भावी उद्यमियों को सब्सिडी प्रदान करने के संबंध में अद्यतन जानकारी देता है। यह वेबसाइट स्थापित कृषि नव उद्यमों, लंबित परियोजनाओं, संबन्धित योजनाओं के ब्यौरों से संबन्धित सूचना तथा राज्य सरकारों, कृषि विश्वविद्यालयों, बैंकों, प्रशिक्षण संस्थानों तथा कृषि उद्यमियों, के लिए उपयोगी अन्य सूचना भी प्रदान करती है।

AGRICLINICS & AGRIBUSINESS CENTRES
BETTER FARMING BY EVERY FARMER

"कृषि उद्यमी" श्रीमति वी.उषा रानी, आईएएस, महानिदेशक, मैनेज द्वारा प्रकाशित है।
कृषि-उद्यमवृत्ति विकास केंद्र (सीएडी),
राष्ट्रीय कृषि विस्तारण प्रबंधन संस्थान (मैनेज),
राजेंद्रनगर, हैदराबाद -500 030, भारत
ई-मेल: agripreneur@manage.gov.in

मुख्य संपादक : श्रीमति वी.उषा रानी, आईएएस, महानिदेशक, संपादक : डॉ.पी. चन्द्रशेखर ,सहायक संपादक: डॉ. लक्ष्मी मूर्ति, श्रीमति ज्योति सहारे,
हिन्दी अनुवाद : डॉ. के. श्रीवल्ली